साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

सुसाइड हब बनता जा रहा कोटा सिटी

सरिता सुराणा

कोचिंग हब के रूप में विख्यात कोटा सिटी परीक्षाओं के नजदीक आते ही सुसाइड हब में बदल जाता है। गत 25 दिसम्बर को एक और छात्र जितेश ने यहां हाॅस्टल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह बिहार में सिवान जिले के बहरिया पुलिस थाने का मूल निवासी था और यहां रहकर आईआईटी की तैयारी कर रहा था। वह यहां पर तीन साल से कोचिंग कर रहा था। वह कोटा के महावीर नगर इलाके में एक हाॅस्टल में रहता था। घटना की सुबह जब वह नौ बजे तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकला तो उसके मित्र उसे देखने के लिए उसके कमरे पर आए, कमरा अंदर से बंद था। जब उन्होंने खिड़की से झांक कर देखा तो जितेश पंखे पर रस्सी का फंदा लगाकर लटका हुआ था। पिछले पांच दिनों में यह आत्महत्या का तीसरा मामला था और 24 घंटे में दूसरा।

इससे पहले 24 दिसम्बर को मेडिकल की छात्रा दिशा सिंह ने हाॅस्टल में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली थी। यह छात्रा उत्तर-प्रदेश के रामखोला कुशीनगर की रहने वाली थी और लैंडमार्क सिटी स्थित एक हाॅस्टल में रहती थी। इसी समय 12 वीं कक्षा की कोचिंग कर रहे एक और छात्र दीपक दाधीच ने आरकेपुरम स्थित कोचिंग संस्थान में ही फांसी लगाकर अपनी जान दे दी थी। आखिर ऐसा क्या कारण होता है कि परीक्षाएं नजदीक आते ही छात्र आत्महत्या करने लगते हैं।

जिम्मेदार कौन....

पांच दिनों में तीन होनहार छात्रों की आत्महत्या पूरे देश को झकझोर देने वाली है। कोटा में जनवरी 2018 से अब तक कोचिंग संस्थानों में तैयारी कर रहे 19 छात्र-छात्राएं आत्महत्या कर चुके हैं। जहां जितेश गुप्ता

आईआईटी जेईई की तैयारी कर रहा था, वहीं दीक्षा एनईईटी की अभ्यर्थी थी। दीपक दाधीच भी यहां पर आईआईटी की ही तैयारी कर रहा था।

वर्ष 2014 में कोटा में बड़ी संख्या में हुई छात्र आत्महत्याओं के बाद हाईकोर्ट और जिला प्रशासन ने कोचिंग संस्थान, हॉस्टल, पीजी और मेस के लिए कई तरह की गाइडलाइंस जारी की थीं। बावजूद इसके आत्महत्याओं का यह सिलसिला रुक नहीं रहा है। इससे पहले 18 दिसम्बर को जम्मू-कश्मीर के संजीव कुमार ने कोटा के ही महावीर नगर इलाके में अपने हॉस्टल के कमरे में फांसी लगा ली थी। वह यहां मेडिकल की तैयारी कर रहा था। आखिर क्यों और कब तक यह सिलसिला चलता रहेगा? कौन है इसके लिए जिम्मेदार?

*** माता-पिता की उम्मीदों का दबाव**

वर्ष 2015 में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज की प्रोफेसर सुजाता श्रीराम की अध्यक्षता में एक फैक्ट फाइंडिंग टीम बनाई गई थी, जो इन आत्महत्याओं के पीछे की वजहों का पता लगा सके। इस टीम में चेतना दुग्गल, निखार राणावत और राजश्री फारिया भी शामिल थीं। उनके द्वारा तैयार रिपोर्ट में जो दो सबसे बड़ी वजहें सामने आईं, वे थीं- मां-बाप की तरफ से मिलने वाला मानसिक दबाव और बेहद दबाव भरी कोचिंग प्रैक्टिस।

कोटा आने वाले अधिकांश बच्चों के माता-पिता उन्हें यहां पर भेजते ही इसलिए हैं कि वे भविष्य में अच्छे डॉक्टर या इंजीनियर बन सकें। जब वे आशाओं के अनुरूप रिजल्ट नहीं दे पाते हैं तो उनके घर से बार-बार अच्छा पढ़ने और अच्छी पोजीशन लाने के लिए फोन आते हैं, जिनसे बच्चों पर पढ़ाई का दबाव बहुत बढ़ जाता है।

*** कोचिंग सेंटर में पढ़ाई का दबाव**

कोटा में ज़्यादातर कोचिंग संस्थान टॉपर्स फार्मूले पर काम करते हैं। वहां पर महीने में दो बार टेस्ट होते हैं, उनमें अच्छा परफॉर्म करने वाले बच्चों को आगे बढ़ाया जाता है और उन्हें संस्थान व फैकल्टी द्वारा पूरी सुविधाएं उपलब्ध

करवाई जाती हैं। इन्हें अलग से भी क्लासेज दी जाती हैं। इनके बैच में कम बच्चे होते हैं और उन पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है। इसके बाद एवरेज बच्चों का बैच होता है, जिसमें 50 से 100 तक बच्चे होते हैं और सबसे कम नंबर लाने वाले बच्चों का बैच 200 तक का होता है। ये ही वे बच्चे हैं जो पूर्ण देखरेख के अभाव में धीरे-धीरे मानसिक तनाव का शिकार हो जाते हैं और अंत में आत्महत्या जैसा गम्भीर कदम उठाने पर मजबूर हो जाते हैं।

*** डिप्रेशन का शिकार**

आईआईटी की तैयारी कर रहे बिहार के पवन कुमार का कहना है कि यहां आने वाले अधिकांश बच्चे अपने स्कूलों के टॉपर्स होते हैं लेकिन यहां आकर उन्हें बेहद कड़े कम्पीटिशन का सामना करना पड़ता है। ऐसे बच्चों को फैकल्टी जब सेकण्ड या थर्ड बैच में भेज देते हैं तो वे डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। वे हीन भावना से ग्रस्त होकर अपने आप को दोषी मानने लगते हैं और सही मार्गदर्शन न मिलने पर आत्महत्या जैसा कदम उठाने पर मजबूर हो जाते हैं।

*** किशोरावस्था में अकेलापन**

किशोरावस्था ऐसी अवस्था है जिसमें बच्चों को माता-पिता के स्नेह और साथ की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। इस अवस्था में जब उन्हें घर से कोसों दूर अकेले सिर्फ पढ़ने के लिए भेज दिया जाता है तो उन्हें वहां न मां-बाप का प्यार मिलता है, न बचपन के दोस्तों का साथ और न ही भाई-बहन का साथ, यहां वे बिल्कुल अकेले होते हैं। कहने को तो उनके रूममेट उनके साथ होते हैं लेकिन जरूरी नहीं कि उनके साथ आपकी हर राय मिलती हो और आप उन्हें अपने मन की हरेक बात बता सकें। ऐसे में अगर उनके साथ कोई समस्या आती है तो उसे उन्हें खुद ही सुलझाना पड़ता है और यहां पर ही वे कई बार मात खा जाते हैं।

*** ड्रग्स और रिलेशनशिप**

कोटा शहर में ड्रग्स आसानी से उपलब्ध हैं। इस अवस्था में बच्चे पूर्णतया परिपक्व नहीं होते हैं, उन्हें अपने भले-बुरे का ज्ञान नहीं होता है। ऐसे में जब उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिलता है तो उनके कदम लड़खड़ा जाते हैं और वे या तो नशा करने लगते हैं या फिर विपरीत सेक्स के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। कोटा जैसे छोटे शहर में भी स्टूडेंट्स के रिलेशनशिप और ब्रेकअप की हजारों कहानियां बिखरी पड़ी हैं। जनवरी में अपने कमरे से लापता बिहारी छात्र अनुराग भारती की आत्महत्या के बाद पुलिस ने जब उसके कमरे की तलाशी ली तो वहां पर से नशे का सामान बरामद हुआ।

क्या कहते हैं मनोचिकित्सक

कोटा मेडिकल कॉलेज में सीनियर मनोचिकित्सक प्रोफेसर डॉ. भरतसिंह शेखावत का कहना है, 'ऐसे माहौल में यह जरूरी है कि छात्र-छात्राओं को कोई ऐसा व्यक्ति मिले, जिससे वे अपने मन की बात कह सकें। परिवार या माता-पिता की पसंद के कारण कई बार छात्र ऐसा क्षेत्र चुन लेते हैं, जिनमें उनकी कोई रुचि नहीं होती। दूसरा ये कि महंगी फीस भरने के बाद बच्चे तनाव में आ जाते हैं कि उनके घरवालों ने उन पर बहुत पैसा खर्च किया है। और इसी वजह से वे आत्महत्या जैसा गम्भीर कदम उठाते हैं।'

डॉ. एम.एल.अग्रवाल जो कोटा में ही मनोचिकित्सक हैं, उनका कहना है, 'अक्सर अभिभावक अपने बच्चे के जन्म से ही उसका भविष्य निर्धारित कर लेते हैं कि उसे बड़े होकर क्या बनना है? दबाव का मुख्य कारण यही होता है कि एक बच्चे की रुचि-अरुचि जाने बिना ही उसे डाॅक्टर या इंजीनियर बनाने की भट्टी में झोंक दिया जाता है। ऐसे में एक तरफ बच्चे पर परिवार का दबाव होता है तो दूसरी तरफ प्रतिस्पर्धा का और ये दोनों ही बच्चों में तनाव के मुख्य कारण हैं।'

क्या कहते हैं छात्र

कोटा में ही कोचिंग करने वाले 23 साल के आशीष मिश्रा अपने साथी के साथ हुए एक वाकये के बारे में बताते हुए कहते हैं, 'उसका चयन आईआईटी के केमिकल इंजीनियरिंग कोर्स में हो गया था, परन्तु उसके माता-पिता चाहते थे कि वह और एक साल ड्रॉप करके कम्प्यूटर इंजीनियरिंग कोर्स के लिए तैयारी करे। आखिर में उसने खुदकुशी कर ली और एक चिट्ठी में अपने मां-बाप से माफी मांगते हुए यह लिख गया कि वह उनकी सब उम्मीदें पूरी नहीं कर सका।'

राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के छात्र रहे राज ने भी कोटा के एक प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान में पढ़ाई की है, उनका कहना है, 'जो छात्र परिवार के साथ रहते हैं, उन्हें तो परिजनों के साथ बातचीत करने से मानसिक दबाव से उबरने में सहयोग मिल जाता है लेकिन जो अपने परिवार से दूर अकेले रहकर यहां परीक्षा की तैयारी कर रहे होते हैं, उन पर अकेलेपन के कारण तनाव और नकारात्मकता हावी हो जाती है और ऐसे ही अधिकांश छात्र आत्महत्या करते हैं।'

कारण चाहे जो भी हों, निष्कर्ष यही है कि पेशेवर शिक्षा ने छात्रों को एक बाजारू प्रोडक्ट बनाकर रख दिया है, जो कोचिंग संस्थानों के लिए सोने के अण्डे देने वाली मुर्गियां हैं। मां-बाप की महत्वाकांक्षाएं इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि वे अपने बच्चों से उनका बचपन छीन कर उन्हें रोबोट बनाने पर तुले हैं, वो भी मुंहमांगी कीमत देकर। इससे अच्छा तो यह है कि इतना पैसा खर्च कर वे बच्चे को उसकी मनपसंद राह चुनने में उसकी मदद करें और अपने बच्चे को जीते जी मौत के मुंह में न धकेलें।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें